International Journal of Applied Research 2020; 6(1): 76-77

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(1): 76-77
www.allresearchjournal.com
Received: 06-12-2019
Accepted: 10-01-2019

रीना रानी
सहायक प्रोफेसर, (हिन्दी विभाग)
आई॰ बी॰ (पी॰जी॰) कॉलेज
पानीपत, हरियाणा, भारत।

Correspondence Author:
रीना रानी
सहायक प्रोफेसर, (हिन्दी विभाग)
आई॰ बी॰ (पी॰जी॰) कॉलेज
पानीपत, हरियाणा, भारत।

छायावादी काव्य में दलित–विमर्ष

रीना रानी

प्रस्तावना

छायावाद हिन्दी साहित्य की अत्यन्त समृद्ध सौन्दर्यषालिनी तथा सषक्त कलात्मक काव्य–धारा है। मोटे तौर पर दो महायुद्धों (1914–18 तथा 1935–36) के बीच की काव्यधारा को छायावादी काव्यधारा कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में कविता के लिए 'छायावाद' शब्द का प्रयोग 1921 ई. के आस–पास ही चला था। आगे चलकर छायावाद के लिए 'मिस्टिसिज्म' शब्द अंग्रेजी पर्याय स्वरूप प्रयुक्त होने लगा। 'मिस्टिसिज्म' शब्द के आते ही 'रहस्यवाद' शब्द की बुनियाद पड़ गई। सन् 1930 के आस–पास छायावाद के साथ 'रोमैंटिसिज्म' नाम भी जुड़ गया। 'रोमैंटिसिज्म' का अनुवाद 'स्वच्छन्दतावाद' बनकर स्वच्छन्दवाद छायावाद का एक अंग होते हुए भी कभी–कभी छायावाद को 'स्वच्छन्दतावाद' के नाम से भी अभिहित किया जाने लगा। अतः स्पष्ट है कि छायावाद को विभिन्न नामों से जाना गया है।

वास्तव में 'छायावाद' की प्रेरणा पष्चिम से मिली थी, पर वह पाष्चात्य 'रोमैंटिसिज्म' या मिस्टिसिज्म की अनुकृति मात्र न था। उसका जन्म तब हुआ जब हमारे देष में सुधारवादी आन्दोलन का जोर था और हिन्दी काव्य में पौराणिकता की प्रवृति क्रियाषील थी। छायावाद ने क्रान्ति की पताका के साथ हिन्दी काव्य में प्रवेष किया और काव्य की प्राचीन पद्धति पर आक्रमण कर दिया। परिणाम स्वरूप कला पक्ष की दृश्टि से एक सर्वथा नवीन प्रयोग देखा जाने लगा। कुछ समय के पष्चात् राश्ट्रीय आन्दोलन एवं महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा विवेकानन्द के मानवतावादी दृश्टिकोण का भी इस पर प्रभाव पड़ा और छायावादी कवियों ने जाति धर्म के सुधार की संकीर्ण मनोवृत्ति, प्राचीन रूढ़िवादिता और परम्परागत सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक दृश्टिकोण की अवहेलना कर उपेक्षित, शोशित, पीड़ित, दीन–हीन दलित–वर्ग की करूणा को काव्य रूप देकर अलौकिक विष्व प्रेम के गीत गाने आरम्भ किये।

वे दलित–वर्ग की दीन–हीन स्थिति तथा इस वर्ग के दमन का असली कारण पूँजीवाद, वर्ग–संघर्श, रूढ़ि–रीति एवं परम्परायें तथा जाति–पाति की जंजीरें आदि से छायावादी कवि अवगत हैं और वर्गहीन समाज की स्थापना के लक्ष्य पर चलते रहे हैं। शम्भुनाथ ने लिखा है – ''इसीलिए मनुश्य जाति के अग्रचेता चिंतक कवि सहज ज्ञान द्वारा संसार को समझने की चेश्टा करते हैं और सामाजिक संघर्शों के मूल–कारण वर्ग–संघर्श को मिटाने का प्रयत्न करते है। जब तक वर्ग–संघर्श का रूप अधिक तीव्र नहीं हुआ रहता, समाज के सभी वर्गों के उदय, सर्वोदय, विष्वमानवतावाद आदि आदर्षों की स्थापना होती है और जब वह अधिक तीव्र हो जाता है तो बहुजन समाज को विजय और वर्गहीन समाज की स्थापना की कामना की जाती है। छायावादी कविता में ये दोनों ही प्रकार की प्रवृतियां दिखलाई पड़ती हैं।''[1]

छायावादी कवि जाति पाति के संकुचित दायरे से परे रहकर मानव में एकता प्रस्थापित करते हुए मानव मात्र की विजय कामना के गीत गाते हैं। मानव को चार वर्णों में विभाजित करने वाली प्राचीन वर्ण व्यवस्था के प्रति छायावादी कवि के मन में विद्रोह की भावना भरी हुई है, क्योंकि इस वर्ण व्यवस्था के कारण मानव, मानव से दूर हो जाता है। इस वियोग के कारण मानव जीवन में दुःख आना स्वाभाविक ही है।

जातिगत रूढ़ि रीतियों का त्याग कर दिए बिना मानव, मानव एक नहीं हो पाएगा। इस जीवन की ऐसी संकुचित भावना को त्यागकर छायावादी कवियों ने एक नए युग का निर्माण करने की कामना की है। रूढ़ि–रीति, जाति–पाति, श्रेणी वर्ग में विभाजित मानव अपना मनुश्यत्व खो बैठता है।

''जाति–पाति, वंष ख्याति
धनी निर्धन, भूपति जन,
आत्मा मन, वाणी तन

अभयंकार नृत्य करो,
नवयुग को अखिल वरो।''[2]

छायावाद के चार आधार सतम्भों में से एक निराला जी ने तो खुद ब्राह्मण जाति के होते हुए भी इसे जाति की कटु आलोचना की है । चार स्तरों में विभाजित वर्ण–व्यवस्था में ब्राह्मणों को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया था तो शूद्रों को पदरज से भी नगन्य माना गया था । अतः निराला जी ने ब्राह्मण जाति को त्याज्य घोशित करते हुए कहा –

''ये कान्य कुब्ज–कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करे छेद,
उनके कर कन्या, अर्थ खेद।''[3]

अस्पृष्यों को उपेक्षित मानकर समाज में उनकी होने वाली अवहेलना को देखकर छायावादी कवियों का हृदय पसीजता है। छुआछूत की कुरीति के कारण अस्पृष्यों को मन्दिरों में प्रवेष नहीं दिया जाता है। इतना ही नहीं अपितु वर्णीय लोगों का दावा रहा कि अस्पृष्यों को ज्ञानार्जन करने का भी अधिकार नहीं है। छायावादी कवि डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने शूद्रों एवं अस्पृष्यों की उपेक्षा का चित्रण करने हेतु ही 'एकलव्य' महाकाव्य की रचना की है। डॉ. वर्मा जी ने 'एकलव्य' के माध्यम से वर्ण व्यवस्था एवं जाति–भेद की दीवारों को हिला दिया है। जिस तरह सूर्य किरण, अग्नि एवं वायु किसी विषिश्ट जाति के लिए सीमित नहीं होती उसी तरह विद्यार्जन का अधिकार भी किसी विषिश्ट जाति के लिए सीमित नहीं हो सकता। इसलिए कवि कहता हैः–

''जाति–भेद नहीं, वर्ग वंष भेद भी नहीं,
षिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी अधिकारी हैं।
सूर्य की किरण भी क्या जाति भेद मानती ?''[4]

दलित मानव का बहिश्कार एवं शोशण आधुनिक युग की देन नहीं है । बल्कि यह बहिश्कार एवं शोशण अनादि काल से दलित मानव के जीवन से जोंक के समान चिपका हुआ है । आधुनिक अर्थव्यवस्था के अनुसार मानव समाज में प्रस्थापित वर्ग–भेद एवं वर्ग–भेद के कारण पनपने वाले शोशण का चित्रण करते हुए कवि लिखता है –

''जाति वर्ण वर्गों में मानव जाति–विभाजित
अर्थ शक्ति से रक्त प्राण जन गणना के शोशित''[5]

सवर्णों द्वारा शूद्रों अस्पृष्यों एवं हरिजनों की अवहेलना की कोई सीमा न रहने के कारण उनका जीवन पषु से भी गया गुजरा लगता है तथा उनकी मानवता ही समाप्त हो जाती है । दलितों की इस दयनीय स्थिति का भयावह रूप देहातों में अधिक रहता है । अनिश्ट रूढ़ियों एवं परम्पराओं को देहातों में ही सुरक्षा मिलती है । छायावादी कवि रूढ़ियों से जर्जर देहाती जीवन में होने वाली दलितों की अवहेलना का चित्रण करता है । शूद्रों, अस्पृष्यों एवं सज्जनता की अवहेलना सवर्णों ने ही की है। निराला जी ब्राह्मणों को दोशी ठहराते हुए कहते हैं कि शूद्रों के पतन की असली जड़ है, ब्राह्मण जाति –

''एक दिन ब्राह्मणों ने
हमें पतित किया था
षूद्र कहलाये हम ''[6]

विद्या से वंचित दलित मानव के मन में क्रान्ति की चिनगारी पूँछते हुए वर्मा जी लिखते हैं –

''हमने सहन की है, वर्ग की विगरहर्णा
षूद्र कहलाते रहे सेवा–भाव मानके
किन्तु जब मानव को विद्या का निशेध हो,
बात क्या नहीं क्रांतिकारी बन जाने की।''[7]

छायावादी कवि ऐसे आदर्षों एवं आन्दोलनों की कामना करता है कि जिससे दलितों की अवहेलना समाप्त हो जाए और उन्हें उनकी खोई मानवता फिर से प्राप्त हो जाए। इसीलिए पन्त जी आषा भरे स्वर में कहते हैं –

''जाति वर्ग की श्रेणीवर्ग की
तोड़ भित्तियां दुर्धन
युग–युग के बन्दीगृह से
मानवता निकली बाहर।''[8]

छायावादी कवि चाहता है कि दलितों पर होने वाले अत्याचार समाप्त हो जायें और उसके जीवन की परिभाशा में परिवर्तन आकर उसका जीवन सुखी और सम्पन्न हो जाए। क्योंकि शूद्र, अस्पृष्य एवं अन्त्यज तथा हरिजन इसी समाज के सभ्य नागरिक हैं, उन्हें सम्मान से जीने का अधिकार देना हमारा कर्तव्य है। उनको अपने समान समझना हमारा सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक कर्तव्य है।

संदर्भ

1. शम्भूनाथ सिंह, सरस्वती–मन्दिर, पृ.सं. 123–124
2. सुमित्रानन्दन पन्त, युग नृत्य, युगवाणी, पृ.सं. 118–119
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सरोज–स्मृति, अपरा, पृ.सं. 154
4. डॉ. रामकुमार वर्मा, एकलव्य, पृ.सं. 222
5. सुमित्रानन्दन पंत, स्वर्णोदय, स्वर्ण–किरण,पृ.सं. 121
6. निराला, स्वामी प्रेमानन्द जी, अणिमा, पृ.सं. 63
7. डॉ. रामकुमार वर्मा, एकलव्य, पृ.सं. 18
8. सुमित्रानन्दन पंत, स्वप्न पट, ग्राम्या, पृ.सं. 12